International Journal of Information Movement *Vol. 10 Issue II* *June 2025)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 31-45**

सम्राट हुविष्क का राजत्वकाल

डॉ॰ रेखा
इतिहास प्राध्यापिका
शहीद उधम सिंह राजकीय महाविद्यालय, मटक माजरी इन्द्री, करनाल

सारांश

भारत में कुषाण वंश ने राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात पहली शताब्दी ईस्वी में कुषाणों ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो उत्तरी भारत से लेकर मध्य एशिया तक फैला। इस काल में भारत के अंतर्राष्ट्रीय संबंध सुदृढ़ हुए और विदेशी सांस्कृतिक तत्त्वों को आत्मसात् कर भारतीय संस्कृति और भी समृद्ध हुई। महायान बौद्ध धर्म, गंधार कला तथा बुद्ध प्रतिमा का विकास इसी युग की देन है। कुषाण वंश के प्रमुख शासकों में कनिष्क प्रथम और हुविष्क का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हुविष्क ने न केवल अपने पूर्वजों के साम्राज्य को बनाए रखा बल्कि कला, धर्म और निर्माण कार्यों में भी योगदान दिया। उसके शासनकाल की जानकारी साहित्यिक तथा पुरातात्त्विक स्रोतों से मिलती है, जैसे कल्हण की राजतरंगिणी, अभिलेख एवं सिक्के। कुषाण वंश ने लगभग **150** वर्षों तक शासन कर भारतीय इतिहास में स्थायी प्रभाव छोड़ा।

प्रमुख शब्द : कुषाण वंश, हुविष्क, कनिष्क, गंधार कला, महायान बौद्ध धर्म, मध्य एशिया, राजतरंगिणी, अभिलेख, सिक्के, भारतीय संस्कृति।

1.0 प्रस्तावना

भारत की विदेशी आक्रान्त जातियों में सर्वाधिक स्थायी और प्रभावशाली कुषाण जाति थी । इस जाति के शासकों ने पहली शताब्दी ई॰ में एक साम्राज्य की स्थापना की । मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद कुषाण काल में पहली बार भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई । यह साम्राज्य न केवल उत्तरी भारत में फैला हुआ था अपितु मध्य एशिया तक इसका प्रभाव था । कुषाणकाल में भारत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में वृद्धि हुई तथा विभिन्न देशों के सांस्कृतिक तत्त्वों को आत्मसात् करके भारतीय संस्कृति समृद्ध हुई ।

भारत में कुषाण काल का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से काफी महत्त्व है । इस युग में धर्म,

साहित्य, कला, दर्शन आदि का महत्त्वपूर्ण विकास हुआ और महायान बौद्ध धर्म, गंधार मूर्ति कला और बुद्ध की प्रतिमा का आविर्भाव हुआ । राय चौधरी के शब्दों में 'कुषाणों का युग महान क्रियाशीलता का युग है । यह बात अश्वघोष, नागार्जुन तथा अन्य लेखकों की कृतियों से प्रमाणित होती हैं' । इस युग में बड़ी प्रबल धार्मिक हलचल और धर्मप्रचार विषयक क्रियाशीलनता रही । इसी समय शैव धर्म, महायान सम्प्रदाय, मिहिर और वासुदेव कृष्ण की उपासनाओं का विकास हुआ । कुषाण काल में बौद्ध धर्म चीन में फैला तथा मध्य और पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए मार्ग प्रशस्त हुआ ।[i]

कुषाण वंश में कई शासक हुए । इस राजवंश का आरम्भ कुजुल कदफिसिस ने **25** ई॰ के लगभग किया । कुषाण वंश का वंशानुक्रम निम्न प्रकार से है ।

कुजुल कदफिसिस	-	(**25-35** ईस्वी)
विम कदफिसिस	-	(**35-62** ईस्वी)
सोटर मेगस	-	(**62-78** ईस्वी)
कनिष्क प्रथम	-	(**78-102** ईस्वी)
वशिष्ठ प्रथम	-	(**102-106** ईस्वी)
हुविष्क प्रथम	-	(**106-138** ईस्वी)
कनिष्क द्वितीय	-	(**138-39** ईस्वी)
वासुदेव प्रथम	-	(**139-160** ईस्वी)

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कुषाण वंशी राजाओं ने लगभग **150** वर्षों तक राज्य किया । लेकिन **176** ई॰ के बाद कुषाणों के साम्राज्य के अनेक क्षेत्रों पर अन्य जनपदों और राज्यों का अधिकार हो गया । यौधेय, कुंणिद, आदि गणों व नाग शासकों ने कुषाणों को मध्य देश व पंजाब के क्षेत्र से खदेड़ दिया । तीसरी-चौथी सदी ई॰ में कुषाण लोग कई शाखाओं में विभक्त होकर उत्तर-पश्चिम भारत में शासन करते रहे थे । समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति में उत्तर-पश्चिम सीमान्त क्षेत्र पर शासन करने वाले कुषाणों का उल्लेख हुआ है ।

2.0 सम्राट हुविष्क

कुषाण वंश के शासकों में सम्राट हुविष्क का राजत्वकाल पर्याप्त महत्त्वपूर्ण रहा । वह वशिष्क प्रथम का पुत्र तथा कनिष्क प्रथम का पौत्र था । हुविष्क एक योग्य शासक था तथा उसने विरासत में प्राप्त कुषाण साम्राज्य को ज्यों का त्यों बनाए रखा । हुविष्क अपने पिता की भांति निर्माण कला का प्रेमी था । कल्हण की राजतरंगिणी से पता चलता है कि उसने कश्मीर में 'हुष्कपुर' नामक नगर बसाया था । उसने अनेकों प्रकार की मुद्राएं भी प्रचलित की । हुविष्क बौद्ध धर्म का

आश्रयदाता था तथा उसने मथुरा में एक बौद्ध विहार का निर्माण भी करवाया था । लगभग **34** वर्ष शासन करने के पश्चात **138** ई॰ में हुविष्क परलोकवासी हो गया । हुविष्क के राज्यकाल सम्बन्धी राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक जीवन की जानकारी हमें तत्कालीन स्रोतों से प्राप्त होती है ।

3.0 जानकारी के स्रोत

हुविष्ककालीन इतिहास जानने के स्रोतों में साहित्य और पुरातत्त्व प्रमुख है । साहित्यिक स्रोतों के अन्तर्गत हम कल्हण की 'राजतरंगिणी' का उल्लेख कर सकते हैं । राजतरंगिणी के एक श्लोक में 'हुष्क' नाम का उल्लेख हुआ है जिसकी पहचान कुषाण सम्राट हुविष्क से की जाती है ।

'अथाभवन्सस्व नामाक्कपुरश्रयविद्यापिनः हुष्कजुष्क कनिष्काख्यास्त्रयस्तत्रेव पार्थिवाः (**1.138**)[ii]

पुरातात्त्विक स्रोतों में तत्कालीन अभिलेख और सिक्के प्रमुख हैं । हुविष्क के शासनकाल का पहला अभिलेख संवत् **28** (**106** ई॰) का है । इससे पहले के अभिलेख वशिष्क प्रथम के काल का है। वशिष्क प्रथम का अन्तिम अभिलेख संवत् **28** का है जो कि सांची से प्राप्त हुआ था ।[iii] इस अभिलेख के बाद से ही हुविष्क के अभिलेख मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं । इससे वशिष्क प्रथम के बाद हुविष्क प्रथम के शासन करने का तथ्य प्रमाणित हो जाता है।

सम्राट हुविष्क के संवत् **28** (**106** ईस्वी) से संवत् **60** (**138** ईस्वी) तक के अभिलेख प्राप्त हुए हैं । इसमें लगभग **30** बौद्ध, **22** जैन धर्म सम्बन्धी तथा पांच अन्य अभिलेख मिले हैं । यह अभिलेख ब्राह्मी लिपि में तथा प्राकृत भाषा में लिखे गए हैं । कुछ एक खरोष्ठी लिपि में भी मिले हैं । ये अभिलेख मुख्यतः मथुरा, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त और पूर्वी अफगानिस्तान से प्राप्त हुए हैं । इन अभिलेखों में मुख्यतः धार्मिक अनुदानों का विवरण मिलता है । लेकिन इनसे तत्कालीन इतिहास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश पड़ता है ।

4.0 सिक्के

हुविष्क कालीन इतिहास जानने में सिक्कों का भी पर्याप्त महत्त्व है । सिक्कों पर उत्कीर्ण चित्रणों, लेखों तथा चिन्हों से तत्कालीन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है । हुविष्क के भारी मात्रा में सोने, चांदी और तांबे के सिक्के चलाए । सोने के चार प्रकार के, चांदी तथा तांबे के भी चार प्रकार के सिक्के मिलते हैं ।

5.0 शासनकाल और उपाधियां

हुविष्क के अभिलेख संवत् **28** से **62 (106** ई° से **138** ई°) तक के मिले हैं । इस आधार पर उसने लगभग **34** वर्ष तक शासन किया । उसके सिक्कों पर हुविष्क लिखा हुआ मिलता है । जिससे उसके नाम की पुष्टि होती हैं । राजतरंगिणी में उसका 'हुष्क' या 'हुष्का' नाम से उल्लेख मिलता है । एच° डब्लू° बैले ने हुविष्क शब्द का अर्थ निकालने का प्रयास किया है । उनका कथन है कि 'हुव' का अर्थ हैं सर्वोत्तम, नेतृत्ववान अथवा प्रौढ़ जो 'इष्क' शब्द से जुड़ने से अर्थ देता है 'जिसमें हुव गुण है' । इस प्रकार हुविष्क का अर्थ है - जो सर्वोत्तम हो, जो नेतृत्व का गुण रखता हो अथवा जो प्रौढ़ हो ।[iv] हुविश्क के अभिलेखों और सिक्कों पर उसकी अनेक उपाधियां भी मिलती है । जैसे - सिक्कों पर 'शाओननोशाओं एउशकी कोषानो' (शहंशाहों का शहंशाह हुविष्क कुषाण) तथा कुछ सिक्कों पर 'होवेष्की' तथा 'हुवेष्की' भी लिखा हुआ मिलता है । मथुरा के निकट सोंख के उत्खनन में एक ताम्र सिक्का मिला था जिस पर 'हुविष्कस्य' लेख अंकित मिलता है ।[v] अभिलेखों में हुविष्क की उपाधि 'महाराज देवपुत्र हुविष्क' तथा 'महाराज राजातिराज देवपुत्र हुविष्क' तथा 'शाहानुशाही हुविष्क' मिलती है । कुषाण शासकों ने 'देवपुत्र' नामक उपाधि चीन के राजाओं के अनुकरण पर धारण की थी । वह अपने को देवता का पुत्र मानते थे तथा राज्य में रोमनों की भांति श्रेष्ठता का प्रचार प्रसार करते थे । सिक्कों पर उसके शरीर से अग्नि-ज्वालाएं निकलती दिखलाकर उसके देवत्व को प्रचारित करने का प्रयास किया गया है ।

6.0 साम्राज्य विस्तार

हुविष्क के विभिन्न स्थानों पर मिले अभिलेखों और सिक्कों से हमें उसके साम्राज्य विस्तार के बारे में भी पता चलता है । हुविश्क के साम्राज्य का हृदय-स्थल भारत का उत्तर-पश्चिमी सीमांत क्षेत्र था । यहां की प्रसिद्ध नगरी 'पेशावर' उसकी राजधानी थी ।

हुविष्क के सिक्के पश्चिम में अफगानिस्तान, ईरान व मध्य एशिया के बड़े भू-भाग से लेकर पूर्व में भारत में बंगाल और उड़ीसा क्षेत्र तक मिले हैं । हुविष्क के साम्राज्य में गंधार, तक्षशिला, अफगानिस्तान, तुर्कीस्तान, बुखारा व रूस के भू-भाग सम्मिलित थे । यह जानकारी हमें सिक्कों के प्राप्ति स्थलों से होती हैं । उसके सिक्के जलालाबाद (अफगानिस्तान) युसुफजई (पेशावर) पंजाब के रावलपिंडी जिले में मानीकीवाला टोप नं° **1** से पाए गए हैं ।[vi] पठानकोट तथा तक्षशिला से भी हुविष्क के सिक्के बड़ी मात्रा में मिले हैं ।[vii] वार्दक (काबुल) अभिलेख से ज्ञात होता है कि अफगानिस्तान के कुछ भाग पर हुविष्क का अधिकार था । हुविष्क के सिक्कों के प्राप्ति स्थलों जो संयुक्त पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा में स्थिल है, से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि

उसका साम्राज्य उत्तर में बुखारा से लेकर दक्षिण में उज्जैन तक तथा पूर्व में बिहार से लेकर पश्चिम में अफगानिस्तान तक फैला हुआ था । इस विशाल साम्राज्य की राजधानी पुरुषपुर अथवा पेशावर थी ।

7.0 शासन पद्धति

हुविष्ककालीन सिक्कों और अभिलेखों से तत्कालीन शासन प्रणाली के बारे में भी जानकारी मिलती है । हुविष्क का साम्राज्य सुव्यवस्थित ओर संगठित था । उस समय राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली मौजूद थी तथा सारी सत्ता राजा के हाथों में केन्द्रित थी । हुविष्क के सिक्कों पर अंकित 'राजाओं का राजा हुविष्क' से यह बात प्रमाणित होती हैं । सम्राट हुविष्क निरंकुश शासक नहीं अपितु प्रजावत्सल भी था । उसकी 'देवपुत्र' उपाधि से पता चलता है कि वह प्रजा में एक देवता के रूप में प्रस्तुत था । संवत **28** के अभिलेख में उसकी उपाधि 'देवपुत्र-शाहि' (अधीनस्थ राजा) मिलती है।[viii] इससे हम तत्कालनी शासन प्रबन्ध में प्रचलित सामन्तवादी प्रणाली का अनुमान लगा सकते हैं । इससे हमें तत्कालीन समय में संयुक्त शासन प्रणाली के बारे में पता चलता है । कुषाण सम्पूर्ण राज्य में सीधे शासन नहीं करते थे, बल्कि सामन्तों या अधीन शासकों की सहायता से शासन करते थे । हुविष्क के अभिलेखों पर 'महाराज' जैसी उपाधि कई वर्ष पश्चात ही उपलब्ध हुई जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि अपने शासन के आरंभिक वर्षों में वह एक अधीनस्थ राजा या और बाद में वह सत्तारुढ़ हुआ था।

सामन्तवादी जैसी प्रणाली या शासन-व्यवस्था हविष्क के संवत् **28** के अभिलेख से भी प्रमाणित होती है जिसमें बताया गया है कि श्वरासहोर तथा वकन नामक प्रान्तों के शासकों के द्वारा श्रेणियों को दान दिया गया था ।[ix] उस समय शासन विभिन्न प्रशासकीय इकाईयों में बंटा हुआ था जैसे राष्ट्र, जनपद, देश, विषय, ग्राम आदि । शासन की सबसे छोटी इकाई गांव थी, जिसका मुखिया ग्रामिक होता था । इसका विवरण हमें हुविष्क के संवत **40** के एक अभिलेख से मिलता है ।[x] प्रान्तों का मुखिया क्षेत्रप कहलाता है । टोकरी टीले (माट के निकट) से प्राप्त अभिलेख में महादण्डनायक नामक अधिकारी का उल्लेख मिलता है ।[xi] जो राज्य में शान्ति-व्यवस्था बनाए रखने का काम करता था । यह अधिकारी आगे चलकर गुप्तकाल में भी बना रहा । समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में हरिषेण नामक महादण्डनायक का उल्लेख हुआ है।

8.0 हुविष्क का व्यक्तित्व:

यद्यपि साहितियक स्रोतों से हुविष्क के व्यक्तित्व पर अधिक प्रकाश नहीं पड़ता लेकिन उसके

सिक्कों से उसके व्याक्तित्व की जानकारी प्राप्त होती है । उसके सिक्कों पर उसकी विभिन्न प्रकार की आकृति अंकित है । सिक्कों पर उसकी आवक्ष आकृति है ।[xii] राजा का शरीर सुडौल दिखाई देता है । विभिन्न सिक्कों पर उसे विभिन्न प्रकार के शिरस्त्राण और कुंडल पहने दिखाया गया है जिसके आधार पर उसे आभूषण प्रेमी कहा जा सकता है । कुछ सिक्कों पर उसके कंधों से अग्नि की ज्वालाएं प्रज्जवलित होती दिखाई दे रही है । कुछ सिक्कों पर राजा को हाथी की सवारी करते तथा चट्टान पर लेटे हुए भी दिखाया गया है । इस प्रकार के अंकनों से उसके दैव तथा प्रकृति प्रेमी होने का आभास मिलता है । सिक्कों पर उसे युवा तथा वृद्ध दोनों ही रुपों में प्रदर्शित किया गया है ।

सिक्कों से हुविष्क के कुछ अन्य चारित्रिक गुण भी परिलक्षित होते हैं । उसके सिक्कों के पृष्ठभाग पर विभिन्न देवताओं को देखकर कहा जा सकता है कि वह एक धर्म-सहिष्णु राजा था । सिक्कों पर उसे राजदण्ड, भाला, गदा आदि लिए दिखाया गया है, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि वह एक वीर योद्धा भी था । इस प्रकार उसके शासनकाल में कुषाण साम्राज्य ज्यों का त्यों बना रहा । उसे एक महान निर्माता भी माना जा सकता है क्योंकि उसके द्वारा मथुरा में बिहार, हुष्कपुर नगर आदि बनवाये जाने का विवरण मिलता है ।

9.1 सामाजिक जीवन

भारत में प्रवेश करने के बाद कुषाण जाति अधिक देर तक अपना अलग अस्तित्व न रख सकी, वह धीरे-धीरे भारतीय समाज में विलीन हो गई थी । यह उनकी एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है । हुविष्क कालीन सिक्कों, मूर्तियों तथा अभिलेखों से तत्कालीन व्यवस्था पर कुछ प्रकाश पड़ता है । हुविष्ककालीन सामाजिक जीवन का विवरण इस प्रकार है:-

9.2 वर्ण व्यवस्था

कुषाणकालीन समाज मुख्यतः चार वर्गो में विभाजित था । चूंकि कुषाण जाति एक विजेता के रूप में भारत में प्रविष्ट हुई, अतः समाज में वे योद्धा वर्ग में सम्मिलित हुए । यह व्यवस्था हुविष्क के राजत्व काल में भी प्रचलित रही । हुविश्क के संवत **28** के अभिलेख का उल्लेख में मास में सौ ब्राह्मणों को भोजन कराए जाने का उल्लेख मिलता है[xiii] जिससे पता चलता है कि ब्राह्मणों का समाज में काफी मान-सम्मान था । वे दान-दक्षिणा प्राप्त करते थे तथा वे लोग धार्मिक कार्यों के सर्वेसर्वा थे । मथुरा प्रस्तर अभिलेख से पता चलता है कि निर्धन और भूखे प्यासे लोगों का भोजन बांटा जाता था ।[xiv] समाज में कुषाण, ईरानी, मध्य ऐशियाई लोगों के अतिरिक्त ग्रीक भाषी संस्कृति

की भी जानकारी थी ।

9.3 वस्त्राभूषण:

हुविष्ककालीन सिक्कों, प्रतिमाओं आदि पर अंकित राजा तथा देवी-देवताओं की आकृतियों से तत्कालीन समाज में पहने जाने वाले वस्त्राभूषण पर प्रकाश पड़ता है । हुविष्क को सिक्कों पर माथे पर एक पट्टी बांधी हुई पाते हैं ।[xv] कुछ उदाहरणों में वह नुकीले और पैने हेल्मेट पहने हैं । ये हेल्मेट हीरे-जवाहरात से जड़े होते थे । हुविष्क के सिक्कों पर हेल्मेट के साथ रत्न जटित फीता भी होता था जोकि ठोड़ी के नीचे बंधता था ।[xvi] हुविष्क के एक सिक्के पर उसे पगड़ी पहने दिखाया गया है ।[xvii]

9.4 खानपान

सम्राट हुविष्क के संवत् **28** के अभिलेख से लोगों की खानपान सम्बन्धी कुछ आदतों के विषय में पता चलता है । इसमें बताया गया है कि ब्राह्मणों और भूखे प्यासों को भोजन कराने के लिए प्रतिदिन तीन आढक ताजा (सद्यः) पिसा सत्तु (सुक्त), नमक (लवण) अचार या चटनी का प्रयोग किया जाता था ।[xviii] इस प्रकार के भोजन का प्रयोग तो लोग आज भी करते हैं । इसके अलावा तत्कालीन समय में लोग गेहूं, दूध, दही तथा सब्जियां आदि का इस्तेमाल भी करते थे ।[xix] खानपान को स्वादिष्ट बनाने के लिए नमक, गुड़, तेल आदि का भी उपयोग किया जाता था ।[xx]

9.5 मनोरंजन

हुविष्क के सिक्कों तथा अन्य स्रोतों से हमें तत्कालीन मनोरंजन के साधनों के बारे में भी पता चलता है । हुविष्क के एक सिक्के पर राजा को हाथी पर बैठे प्रदर्शित किया गया है ।[xxi] उसके हाथ में अंकुश भी दिखाया गया है जिससे यह प्रमाणित होता है कि उच्च वर्ग में मुख्यतः घुड़दौड़ और हाथी की सवारी का प्रचलन था । उस समय सम्भवतः पक्षी-पालन में भी लोगों की रुचि थी । हुविष्क के एक सोने के सिक्के पर उसे एक डंडा लिए दिखाया गया है जिस पर मुर्गे की आकृति बनी है । साधारण लोगों मंे नृत्य-ज्ञान और सुरापान का प्रचलन था । सुरा महुएं से तैयार की जाती थी तथा कुछ विदेशों में मंगाई जाती थी ।[xxii]

10.0 नारी की स्थिति

हुविष्ककालीन सिक्कों और अभिलेखों के आधार पर तत्कालीन समय में नारी की दशा की भी जानकारी मिलती है । उस समय नारी की स्थिति काफी अच्छी थी क्योंकि हुविष्क के सिक्कों पर

देवताओं के साथ-साथ अनेक देवियों जैसे नना, अर्दोक्षों, ऊमा आदि का अंकन हुआ है । हुविष्क के एक सिक्के पर शिव के साथ उसकी पत्नी उमा का चित्रण है जिसमें देवी शिव के बाएं प्रदर्शित की गई हैं ।[xxiii] आज तक भी हिन्दू समाज में पत्नी को पति के बाएं खड़े होने का विधान है । पुरातत्त्व की दृष्टि से इस प्रथा के कुषाण काल जितना प्राचीन होने का अनुमान लगा सकते हैं । इस आधार पर कहा जा सकता है कि पत्नी को समाज में पति के बराबर का दर्जा प्राप्त था ।

11.0 स्थापत्य कला

हुविष्क के महासेन प्रकार के सिक्कों से हमें तत्कालीन स्थापत्य कला के बारे में पता चलता है । हुविष्क के सिक्कों पर स्कन्दकुमार, विशाख व महासेन को एक चौखट में खड़े दिखाया गया है ।[xxiv] हुविष्ककालीन अभिलेखों में कुछ विहारों का भी उल्लेख हुआ है । इनका वास्तु किस प्रकार का था, उनमें कितने कमरे थे, और उन्हें किस प्रकार अलंकृत किया गया था। संक्षेपतः हम कह सकते हैं कि कुषाण समाज भौतिक रूप से काफी उच्च व सांस्कृतिक रूप से काफी सुदृढ़ था ।

12.0 आर्थिक जीवन

कुषाण साम्राज्य काफी विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था । हुविष्क के शासनकाल में भी शांति, सुरक्षा और व्यवस्था थी । इसलिए देश में वाणिज्य-व्यापार, उद्योगों और व्यवसायों को पर्याप्त प्रोत्साहन मिला । तत्कालीन अभिलेखों से उस समय की आर्थिक स्थिति के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है ।

12.1 **कृषि**:

कुषाणों के शासनकाल में कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था । उस समय गेहूं, चावल, गन्ना, सब्जियों आदि की खेती की जाती थी ।[xxv] हुविष्क के संवत् **50** के अभिलेख में बताया गया है कि एक कृषक परिवार में एक हल चलाने वालों (हालिक) बाहुवीर की पत्नी ने बुद्ध की प्रतिमा स्थापित कराई ।[xxvi] संवत **28** के अभिलेख में तीन आढ़क सत्तू का उल्लेख है । यह सत्तू जौ, चना आदि अनाजों को पीसकर बनाया जाता था । तत्कालीन साहित्यिक स्रोतों में न केवल अनाज की फसलों का उल्लेख हुआ है । अपितु कच्ची चीनी (ईख) एवं अनेक फलों के वृक्षों का भी उल्लेख मिलता हैं ।[xxvii] कृषि के अलावा पशुपालन भी लोगों का एक मुख्य पेशा था । हुविष्क के सिक्कों पर बैल, मुर्गे, सिंह तथा हाथी की आकृतियां दिखाई गई हैं ।

12.2 उद्योग धंधें:

तत्कालीन समय में विभिन्न प्रकार के उद्योग धंधें भी प्रचलित थे । समाज में विभिन्न प्रकार के पेशेवर व्यवसायिक रहते थे जिसका विवरण हमें उस समय के अभिलेखों में मिलता है । हुविष्क के संवत **32** के अभिलेख में एक गन्धिक (इत्र बनाने वाले) का उल्लेख हुआ है । इसी प्रकार संवत **35** के अभिलेख में कुमारभट्टि नामक इत्र बनाने वाले का उल्लेख हुआ है । संभवतः इत्र बनाने वालों का एक वर्ग था और यह एक प्रतिष्ठित व्यवसाय था । तत्कालीन समय में जो लोहे की वस्तुएं निर्मित करते थे, वे लुहार भी थे । संवत **52** के अभिलेख में गेट्टिका नामक लुहार का उल्लेख हुआ है ।[xxviii] इसके अलावा सिक्कों और आभूषणों का निर्माण करने वाले सुनार भी थे । वस्त्र उद्योग भी प्रचलन में था । संवत् **60** के अभिलेख में एक कपड़ा बुनने वाले कार्पासिक वृद्धमित्तक की पत्नी दत्ता का उल्लेख हुआ है, जिसने विशाल मूर्ति की स्थापना कराई थी ।[xxix] कुषाण साम्राज्य के विभिन्न स्थानों से मिली मूर्तियों के आधार पर कहा जा सकता है कि मूर्तियां बनाने वालों का भी एक वर्ग था । विसस्विन नामक एक मूर्तिकार का उल्लेख संवत् **50** के अभिलेख आया है ।[xxx] इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज में विभिन्न पेशेवर लोग जैसे - गन्धिक[xxxi] , लौहकार[xxxii] , रंगरेज[xxxiii] , मूर्तिकार, सुनार आदि लोग थे । इस आधार पर कहा जा सकता है कि हुविष्क के शासनकाल के दौरान विभिन्न उद्योग धंधें प्रचलित थे । तत्कालिक समय के लोग आर्थिक रूप से समृद्ध थे ।

12.3 व्यापार-वाणिज्य:

विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता ळै कि कुषाण काल में व्यापार-वाणिज्य की काफी समृद्ध था । हुविष्क के साम्राज्य की सीमाएं चीनी-तुर्कीस्तान, रोमन साम्राज्य तथा तिब्बत आदि को छूती थी । इन देशों के साथ भारत के घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध थे । भारत से रेशम, सूत, मलमल, गर्म मसाले, रत्न, हीरे, हाथी दांत आदि विदेशों को भेजे जाते थे तथा बदले में सोना मंगाया जाता था । रोमन लेखक प्लिनी ने इस बात का खेद प्रकट किया है कि रोम काफी मात्रा में भारत को सोना भेजता हैं ।[xxxiv]

12.4 मुद्राएं:

हुविष्क कालीन आर्थिक दशा जानने में मुद्राओं का काफी महत्त्व है । विदेशों से घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्धों के परिणामस्वरूप भारत में सोना प्रचुर मात्रा में आने से कुषाण शासकों ने सर्वप्रथम स्वर्ण मुद्राएं प्रचलित करवाई । सामान्य व्यापार-व्यवसाय के लिए हुविष्क ने चांदी और तांबे की मुद्राएं

प्रचलित की । हुविष्क ने लगभग पच्चीस प्रकार के सोने के सिक्के बनाए ।

12.5 मुद्राओं की तौल:

हुविष्क के सोने के सिक्कों की औसत तौल, अलेक्जैण्डर, कनिंघम के मतानुसार **122.16** ग्रेन हैं ।[xxxv] दोहरे दीनार की अधिकतम तौल **246.4** ग्रेन[xxxvi] तथा न्यूनतम तौल **237.6** ग्रेन थी । पाद दीनार की तौल **30.8** ग्रेन थी ।[xxxvii] हुविष्क के महासेन प्रकार के सिक्कों की तौल **119** ग्रेन से **125** ग्रेन तक है । हुविष्क के सोने के सिक्कों में सोने की शुद्ध मात्रा का प्रतिशत **96.05** पायी गयी है ।

सम्राट हुविष्क ने तांबे के सिक्के भी पर्याप्त मात्रा में चलाए।

12.6 सिक्कों के नामकरण:

हुविष्ककालीन सोने के सिक्के चूंकि रोमन दीवार पर आधारित थे, इसलिए हुविष्क के सिक्कों को भी 'दीनार' कहा जाता था । सोने के सिक्कों का एक अन्य नाम 'सुवर्ण' भी था । आरम्भिक अभिलेखों तथा कल्हण की राजतरंगिणी में भी सोने के सिक्कों के लिए 'दीनार' या 'सुवर्ण' शब्द का प्रयोग हुआ है। हुविष्क के तांबे के सिक्कों पर 'कुषाणों' लिखा हुआ मिलता है । अधिकतर विद्वानों का अनुमान है कि तांबे के सिक्कों को उस समय 'कुषाण' भी कहा जाता था । 'कुषाण' शब्द कुषाण जाति के लिए भी प्रचलित था । [xxxviii]

13.0 धार्मिक जीवन

तत्कालीन समय में बौद्ध धर्म अपनी सर्वोच्च पराकाष्ठा पर था। सम्राट हुविष्क के बहुत सारे बौद्ध अभिलेखों के आधार पर यह तथ्य प्रमाणित होता है । समाज में रहने वाले विभिन्न राष्ट्रीयता वाले लोगों की विशेष रुचि बौद्ध धर्म में थी । हुविष्क के बौद्ध अभिलेखों में बहुधा स्तूप और विहार प्रधान है जिनमें बुद्ध तथा बोधिसत्वों की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की जाती थी । अभिलेखों में हुविष्क के संवत् **28** के अभिलेख में व्यापारी सत्वक के पौत्र नगरक्षिता द्वारा बौद्ध विहार में अमिताभ बुद्ध की प्रतिमा स्थापित किए जाने का उल्लेख है ।[xxxix] इसी प्रकार संवत् **28** तथा संवत् **31** के अभिलेखों में क्रमशः एक विहार में बोधीसत्व की मूर्ति तथा मध्य विहार में बोधिसत्व की मूर्ति स्थापित किए जाने का विवरण दिया गया है ।[xl]

हुविष्क के **106** ईस्वी (संवत् **28)** के अभिलेख में बताया गया है कि विभिन्न बिहार और स्तूप

बौद्ध भिक्षु और अनुयायियों को लाभ प्रदान करते थे ।[xli]

अभिलेखों के अनुसार बौद्ध भिक्षु मुख्यतः चार वर्गों में विभाजित थे - (**1)** बौद्ध भिक्षु (**2)** भिक्षुणियां (**3)** उपासक (**4)** उपासिकाएं । भिक्षु-भिक्षुणियों के लिए अनेक विहार स्तूप, मठ आदि बनवाए गए, जिनमें रह कर वे अनुशासन का पालन करते हुए जीवन-यापन करते थे । कुषाण काल की एक मुख्य उपलब्धि यह मानी जाती है कि इस काल तक आते-आते बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में बँंट गया था - हीनयान और महायान । महायान सम्बन्धी उपासकों, भिक्षु-भिक्षुणियों द्वारा बुद्ध की प्रतिमा का पूजन किया जाता था । अब निर्वाण सभी के लिए सुगम को गया था ।

13.1 जैन धर्म

हुविष्क के शासन काल में जैन धर्म का भी विकास हुआ । जैन भिक्षु तथा जैन भिक्षुणियां जैन सम्प्रदाय के प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करने के लिये जैन प्रतिमाओं के निर्माण में काफी रुचि दिखलाते थे । इसकी पुष्टि हुविष्ककालीन कई जैन अभिलेखों से होती है । हुविष्क के संवत **29** के अभिलेख में जैन भिक्षुणी बुद्ध नन्दी ने तीर्थंकर वर्द्धमान की प्रतिमा स्थापित करवाई थी ।[xlii] कंकाली टीला (मथुरा) से प्राप्त, संवत **32** के अभिलेख के अनुसार जितमित्रा भिक्षुणी ने चौमुखी अंर्हत की मूर्ति की स्थापना करवाई थी ।[xliii] मथुरा जैन धर्म का एक प्रसिद्ध केन्द्र था, इस नगर से अनेक जैन प्रतिमाएं मिली हैं । जैन अभिलेखों में संभवनाथ[xliv] , वर्द्धमान[xlv] , अर्हत नन्द्यावर्त[xlvi] तथा सर्वतोभद्रिका[xlvii] मूर्तियों का भी उल्लेख हुआ है ।

13.2 ब्राह्मण धर्म:

कुषाणों के शासनकाल में भारत में ब्राह्मण धर्म भी प्रचलित था । ब्राह्मण देवताओं में शिव सबसे अधिक मान्य और प्रतिष्ठित था । हुविष्क के सिक्कों पर दो या चार भुजाओं वाले शिव की आकृति दिखाई गई है । उसे विभिन्न सिक्कों पर अंकुश, चक्र, कुल्हाड़ी, डमरु, त्रिशूल तथा बिजली गिराते हुए दिखाया गया है । हुविष्क के एक सिक्के पर शिव के साथ देवी उमा को भी दिखाया गया है। जिनको लेख में 'ओइशो' तथा 'ओम्मो' कहा गया है ।[xlviii] इसके अलावा 'विष्णु'[xlix] हुविष्क के एक तांबे के सिक्के पर अंकित हैं । विष्णु को शंख, चक्र, गदा के साथ दिखाया गया है ।[l] हुविष्क के एक तांबे के सिक्के पर धनुर्धारी गणेश की खड़ी आकृति है । इस सिक्के पर ब्राह्मी लिपि में 'गणेशो'[li] लिखा गया है ।

तत्कालीन समाज में नाग-पूजा का भी प्रचलन था । हुविष्क के सम्वत् **40** के अभिलेख में बताया

गया है कि सेनहस्ती तथा भोदंका नामक दो मित्रों ने एक तालाब पर एक नाग-प्रतिमा का निर्माण करवाया था ।[lii]

13.3 अन्य धर्म:

हुविष्क के शासनकाल में प्रचलित सिक्कों के पृष्ठभाग पर यूनानी, ईरानी व रोमन देवी-देवताओं का भी अंकन हुआ है । ईरानी देव मिहिर[liii] (सूर्य) की कोट, पतलून, बूट आदि पहने प्रदर्शित किया गया है । लेख 'मीरों' या 'मिहिर' मिलता है । अन्य ईरानी देव 'मनाओबागो'[liv] (चन्द्र) नामक चतुर्भुजी देवता को सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है । उनके हाथों में दण्ड, माला आदि के तथा लेख 'मनाओबागो' है । ईरानी देवता 'मोओ' [lv] (चन्द्र देवता) 'ऐथसो'[lvi] (अग्नि देवता) प्रमुख हैं ।

हुविष्क के सिक्कों पर कुछ देवियों का भी अंकन हुआ है जैसे - रोम की 'रिडे'[lvii] नामक समृद्धि की देवी को शिरस्त्राण पहने खड़े दिखाया गया है । कनिंघम के अनुसार 'वह भारतीय धन के देवता कुबेर की पत्नी ऋद्धि है ।' कुछ सिक्कों पर देवी नना को भी प्रदर्शित किया गया है । एक ताम्र सिक्के पर हुविष्क को देवी नना के समक्ष घुटने टेके तथा जोड़े दिखाया गया है ।[lviii] हुविष्क के कुछ सिक्कों पर यूनानी, आकाश, पाताल और समुद्र के देवता सरापों को हाथों से माला और भाला लिए दिखाया गया है ।

13.4 धार्मिक सहिष्णुता:

हुविष्ककालीन सिक्कों, अभिलेखों, मूर्तियों आदि में उल्लिखित एवं चित्रित व्यापक देववर्ग को देखकर यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि हुविष्क एक धर्म-सहिष्णु शासक था । उसके विशाल साम्राज्य में विभिन्न धर्मों और राष्ट्रीयता को मानने वाले लोग निवास करते थे । विभिन्न धर्मावलम्बियों की धार्मिक भावनाओं का आदर करने के लिए उनके प्रमुख देवी-देवताओं को अपनी मुद्राओं पर अंकित करवाया । उन्होंने सभी धर्मों को मानने वालों को एक जैसे अधिकार प्रदान कर रखे थे । सुदूर अतीत में इस प्रकार की धार्मिक सहिष्णुता को अपनाना हुविष्क के राजत्व काल की एक महान विशेषता माना जा सकता है ।

14.0 उपसंहार

भारतीय इतिहास में कुषाण काल का विशेष महत्त्व है । मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उत्तरी भारत में पहली बार ऐसा साम्राज्य बना जिसमें राजनीतिक एकता स्थापित हुई तथा इसमें पूर्व

देश, मध्यदेश तथा उत्तरापथ के अतिरिक्त हिन्दुकुश की पहाड़ियों के उस पार मध्य एशिया के भू-भाग भी सम्मिलित थे इससे भारत पुनः विदेशों के सम्पर्क में आया और इस युग में भारतीय संस्कृति, धर्म, विचार आदि प्राकृतिक सीमाओं को पार कर सुदूर देशों में भी फैले।

हुविष्क ने **106** ई॰ से **138** ई॰ तक शासन किया । उसके शसनकाल के लगभग **60** अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिनमें से अधिकांशतः मथुरा में ही पाये गये है । यह हमारी महत्त्वपूर्ण धरोहर है । उसने सबसे अधिक संख्या में सोने के सिक्के चलाए थे । उसके चांदी और तांबे के सिक्के भी प्राप्त हैं । इन अभिलेखों तथा उसके प्राप्त सिक्कों से हुविष्क द्वारा विभिन्न उपाधियों धारण करने का साक्ष्य मिलता है । सम्राट हुविष्क का विस्तृत शासन रहा था । उस समय संयुक्त शासन प्रणाली रही थी । कुषाण शसक सामन्तों या अधिनस्थ शासकों की सहायता से शासन करते थे । हुविष्क के एक अभिलेख में वफन तथा खरासहोर नामक प्रान्तों के शासकों का उल्लेख है जिन्होंने श्रेणियों को दान दिया था । विभिन्न अभिलेखों में विभिन्न प्रशासकीय इकाईयों - राष्ट्र, जनपद, देश, विषय, ग्राम आदि का विवरण भी मिलता है । ग्रामिक, महादण्डानायक आदि अधिकारियों का भी उल्लेख है जो अपने-अपने अधिकार क्षेत्रों में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने का काम करते थे ।

अभिलेखों तथा सिक्कों से हुविष्क कालीन सामाजिक दशा का ज्ञान होता है । तत्कालीन वर्ण-व्यवस्था, वस्त्राभूषण, खानपान, मनोरंजन, नारी की स्थिति, फर्नीचर, स्थापत्य कला आदि की भी जानकारी प्राप्त होती है । यह कुषाण काल की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है कि कुषाण जाति अधिक देर तक अपना अलग अस्तित्व न रख सकी । अपितु धीरे-धीरे भारतीय समाज में विलीन हो गई थी ।

हुविष्क कालीन अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उस समय विभिन्न बौद्ध विहार और स्तूप स्थापित किए तथा महायान धर्म के प्रसंग से बौद्ध धर्म स्थानीय न रहकर विश्व-धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ । कुषाण शासकों का भारतीय धर्म पर यह प्रभाव पड़ा कि बुद्ध और बोधिसत्वों की असंख्य मूर्तियां तैयार की गई । धर्म के क्षेत्र में हुविष्क के शासन काल की मुख्य उपलब्धि यह मानी जाती है कि उसने विभिन्न धर्मों के देवी-देवताओं को अपने सिक्कों पर स्थान देकर अपनी धार्मिक-सहिष्णुता का परिचय दिया ।

हुविष्क के शसन काल के अन्तर्गत भारतीय सभ्यता और संस्कृति का पर्याप्त विकास हुआ । इस युग में व्यापार-वाणिज्य, साहित्य, कला आदि की अभूतपूर्व उन्नति हुई । कुषाण जाति की एक

अन्य उपलब्धि यह मानी जाती है कि उनका धीरे-धीरे भारतीयकरण हुआ और समय के साथ वे भारतीय समाज में घुल- मिल गए थे । कुषाण काल में भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति की जो सर्वतोन्मुखी उन्नति हुई, उससे गुप्तकालीन गौरव का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

15.0 संदर्भ सूची

[i] राय चौधरी, पो० हि० ए० इ०, पृ० 399–400
[ii] स्टैन, एन० ए०, कल्हण की राजतरंगिणी, पृ० 8
[iii] गोयल, पूर्वोक्त, पृ० 252
[iv] जे० एम० रोजेनफील्ड, डी०ए०के०, पृ० 59
[v] ज० न्यू० सो० इ०, 35, 1973, पृ० 123 व आगे ।
[vi] प्रिसेपंस एस्सेज, भाग 1, पृ० 94–102
[vii] जे० मार्शल, तक्षशिला, भाग–3, कैम्ब्रिज, 1951
[viii] ऐपिग्राफिया इण्डिका, 21, पृ० 55–61
[ix] ऐपिग्राफिया इण्डिका, 21, पृ० 58
[x] ऐपिग्राफिया इण्डिका, 1, पृ० 387–88 (श्रवा, डी० के आई, पृ० 74)
[xi] सत्य श्रवा, डी० के० आई०, पृ० 59–60
[xii] एन क्रोनो, 1892, प्लेट 19 बी
[xiii] ऐपिग्राफिया इण्डिका 21, पृ० 55–61 स्रव सत्य, डी०के०आई०, पृ० 57
[xiv] ऐपिग्रफिया इण्डिका – ए० रिवाइव, 1979–80, पृ० 91, संख्या 46 श्रवा सत्य, डी० के आई, पृ० 57
[xv] न्यूमेरिकल, क्रोनो, 1892, प्लेट 19.7
[xvi] बी०एम०सी०, प्लेट 19, 13
[xvii] चक्रवर्ती स्वाति, प्राचीन भारत सिक्कों का सामाजिक–धार्मिक और सांस्कृतिक अध्ययन, पृ० 215
[xviii] ऐपिग्राफिया इण्डिका, 21, पृ० 55–61
[xix] स्ट्रैबो, ज्योग्रोफी, बी० के०, 15, 18
[xx] महावग्ग 6, 34
[xxi] रोजेनफील्ड, जे० एम०, दी डारनेस्टीक आर्टस ऑफ दी कुषाणाज प्लेट नं० 41–43
[xxii] वही, काएन्स स०, 65–67
[xxiii] मुखर्जी, बी० एन०, पृ० 25, प्लेट 27, संख्या 16–18
[xxiv] बी० एम० सी०, प्लेट 28, 22–23
[xxv] स्ट्रैबो, ज्योग्राफी, बी० के०, 15, 20
[xxvi] ऐपिग्राफिया इण्डिका, पृ० 55–61 सत्य श्रवा, डी० के० आई, पृ० 57
[xxvii] नेचुरल हिस्ट्री, बी० के० 12, अध्याय 16, पृ० 11, 720, बलदेव कुमार

[xxviii] वही, 11, पृ० 203, संख्या 18, सत्य श्रवा, डी० के० आई, पृ० 97
[xxix] ऐपिग्राफिया इण्डिका, 1, 1892, पृ० 386, वही, पृ० 100
[xxx] सत्य श्रवा, डी० के० आई, पृ० 92–93
[xxxi] मथुरा अभिलेख, 32 ईस्वी, ऐपिग्राफिया इण्डिका, संस्करण 1, पृ० 385–86
[xxxii] 52वें वर्ष का मथुरा जैन अभिलेख, वही ।
[xxxiii] मथुरा जैन अभिलेख (60 ई०), सत्य श्रवा, डी० के० आई, पृ० 100
[xxxiv] बी० एन० मुखर्जी, दी इकोनोमिक फैक्टर इन कुषाण हिस्ट्री कलकत्ता, 1978
[xxxv] चट्टोपाध्याय, भास्कर, उपरोक्त, पृ० 193
[xxxvi] वही, उपरोक्त, पृ० 192
[xxxvii] न्यूमैरिकल, कोनो, 1992, प्लेटह 15, 9
[xxxviii] चट्टोपाध्याय, भास्कर, उपरोक्त, पृ० 202–03
[xxxix] ऐपिग्राफिया इण्डिका, ए रिवाइव, 1979–80, पृ० 41, नं० 46
[xl] सत्य श्रवा, डी० के आई, पृ० 63
[xli] वही, पृ० 61
[xlii] पिग्राफिया इण्डिका, संस्करण 1, पृ० 385, संख्या 6, सत्य श्रवा, डी० के० आई०, पृ० 78
[xliii] ऐपिग्राफिया इण्डिका, संस्करण 2, पृ० 385, संख्या 6, सत्य श्रवा, डी० के० आई०, पृ० 203
[xliv] सत्य श्रवा, डी० के० आई०, पृ० 88–89
[xlv] वही, पृ० 61–62
[xlvi] वही, पृ० 89–90
[xlvii] वही, पृ० 65–66
[xlviii] जे०आई०ए०एस०, 1897, पृ० 322–24
[xlix] ए०आई०बी०, पृ० 439
[l] ए०आई०बी०, पृ० 439
[li] स्मिथ, बी०ए० केटेलॉग ऑफ दी कॉएन्स इन दी इण्डियन म्युजियम, संस्करण 1, पृ० 81

[lii] सत्य श्रवा, डी० के० आई०, पृ० 75
[liii] बी०एम०सी०, हुविष्काज कॉएन्स, संख्या 153
[liv] वही, पृ० 27, 17
[lv] बी० एम० सी०, हुविष्काज कॉएन्स, नं० 166
[lvi] न० क्रोनो० संस्करण 12, तीसरी सीरीज, पृ० 147
[lvii] न्यू० क्रा०, 1892, पृ० 117–18
[lviii] वही